(५८१)

पंडित ओर मसालचि, दोनो सुंजे नाहि;
ओरनको करे चांदना, आप अंधेरा मांहि ।

(५८२)

निर्पक्षको भक्ति हय, निर्मोहिको ज्ञान;
निदेन्दीको मुक्ति हय, निर्लोभी निर्वाण ।

(५८३)

भुख गइ भोजन मिले, थंड गइ मिली कबाय;
जोबन गयो त्रीया मिले, ताको आग लगाय ।

(५८४)

ज्युं गुंगाके सेनको, गुंगाहि पयछाने;
त्युं ज्ञानीके ज्ञानको, ज्ञानी होय सो जाने ।

(५८५)

मांगनको भलो बोलनो, चोरनको भली चप;
मालीको भलो बरसनो, धोभीको भली धप ।

(५८६)

धोति पोति विनती, गुरु सेवा संत संग;
ऐ औरनसे न बने, खाज खुजावत अंग ।

(५८७)

तिन तापमे ताप हय, तिनका अनंत उपाय;
अद्यात्म ताप महाबलि, संत बिना नहि जाय ।

(५८८)

लिखना पढना चातुरी, ए सब बातां सहेल;
काम दहन मन वश करन, गगन चढन मुश्केल ।

(५८९)

ज्ञानी मुल गमाइयां, आपे भया करता;
ताते संसारी भला, मनमे रहे डरता ।

(५९०)

कामी लज्या न करे, मन माने युं लाड;
निंद न मागे साठरो, भुख न मागे स्वाद ।

(५९१)

भुख लगी तब कछु नहि सुजे, ध्यान ज्ञान सब रोटीमे;
कहत कबीरा सुन भाई साधु, आग लगो ए पोठीमे ।

(५९२)

कामका गुरु कामीनी, लोभिका गुरु दाम ;
कबीरका गुरु संत हय, संतनका गुरु राम ।

(५९३)

हिरे हिराकी कोथली, बार बार मत खोल;
मिले हिराकी जोहरी, तब हिराका मोल ।

(५९४)

हीरा जरा न खोलिये, कुंजरे के हाथ;
सेहेजे गांठे बांधीये, चलिये अपनी बात ।

(५९५)

तन सनदुक गुन रतन चुप, ताहि दिजे ताल;
ग्राहक बिना न खोलिए, कुंची बचन रसाल ।

(५९६)

हिरा पडा बाजारमें, रह्या छार लपटाय;
केतके अंधे चल गये, परख न लिया उठाय ।

(५९७)

राम पदार्थ मुजमे, खांन खुली घट मांहि;
सेत मेत हम देत हय, पर ग्राहक कोइ नाहि ।

(५९८)

जहां न जाको गुन लहे, तहां न ताको ठाव;
धोबी बेठा कया करे, दिगम्बरो के गांव ?

<u>सखावत के बारे में</u> (५९९)

कहे कबीर कमालको, दो बातां शिख ले;
कर साहेबकी बंदगी, ओर भुखेको कछु दे ।

(६००)

हाड बढां हरि भजन कर, द्रव्य बढा कछु देय;
अक्कल बढी उपकार कर, जीवनका फल येह ।

(६०१)

गांठी होय सो हाथ कर, हाथ होय सो दे;
आगे होट न बानियां, लेना होय सो ले ।

(६०२)

खाय पि खलाय दे, कर ले अपनां काम;
चलती वखत रे नरो, संग न चले बदाम ।

(६०३)

धर्म किये धन ना घटे, नदि न संचे नीर;
अपनी आंखे देखीये, युं कहे दास कबीर ।

(६०४)

भिख तीन प्रकारकी, सुनो संत चित्त लाय;
दास कबीर प्रगट कहे, भिन्न भिन्न अर्थाय ।

(६०५)

अण माग्या उत्तम कहिये, मध्यम मागी जो लेय;
कहे कबीर कनिष्ट सो, पर घर धरना देय ।

(६०६)

मांगन मरण समान हय, मत कोइ मांगो भिख;
मांगनेसे मरना भला, एहि सद्गुरुकी शिख ।

(६०७)

मरुं पण मागुं नहि, अपने तनके काज;
परमारथके कारणे, मागन न आवे लाज ।

(६०८)

सहेज दिया सो दुध बराबर, मांग लिया सो पानी;
खिंच लिया सो रक्त् बराबर, एहि कबीरा बानी ।

(६०९)

भुखेको कछु दिजीए, यथा शक्ति जो होय;
ता उपर शितल बचन, लखो आत्मा सोय ।

(६१०)

जहां दया वहां धर्म, जहां लोभ वहां पाप;
जहां क्रोध वहां काळ, जहां क्षमा वहां आप ।

(६११)

कुंजर मुखसे कन गिरो, खुटो न वाको अहार;
किडी कन ले चली, पोषण दई परिवार ।

(६१२)

दाता दाता चल गये, रहे गये मखीचुर;
दान मान समजे नहि, लडनेमे मजबुर ।

(६१३)

माणस खोजत में फिरा, माणसका बरा सुकाल;
पर जाको देखे दिल ठरे, ताका परीया दुकाल ।

(६१४)

दयाका लक्षण भक्ति, भक्तिसे मिलत ज्ञान;
ज्ञानसे होवत ध्यान, ए सिद्धांत उर आन ।

(६१५)

बिषय त्याग वैराग हय, समता कहिये ज्ञान;
सुखदाई सब जीवसों, एहि भक्ति प्रमाण ।

<u>मनुष्य का सच्चा श्रृंगार</u> (६१६)

अेलमसे उद्योग खिले, खिले नेकीसे नुर;
अेलम बिन संसारमें, समज अंधेरो धुर ।

(६१७)

सबळ खमी निर्गव धनी, कोमळ विद्यावंत;
भुवा भुषन तिन हय, और सब अनंत ।

(६१८)

कबीर ! इन संसारमे, पंच रत्न हय सार;
साधु मिलन, हरिभजन, दया दिन उपकार ।

(६१९)

धन रहे न जोबन रहे, न रहे गाम न ठाम;
कबीर ! जगमे जश रहे, के कर दे किसीको काम ।

(६२०)

लेनेको हर नाम हय, देनेको अन्न दान,
तिरनेको आधिनता, बुडनेको अभियान ।

(६२१)

पशुकी तो पनिंया भई, नरका कछु न होय;
पर जो उत्तम करणी करे, तो नर नारायण होय ।

(६२२)

कबीर ! में मांगु ए मांगना, प्रभु मोहे दिजे सोय;
संत समागम हरि कथा, हमारे निशदिन होय ।

(६२३)

मुगटा जुगत मांगुं नहि, भक्ति दान दिजो मोहे;
ओर कछु मागुं नहि, निशदिन जाचुं तोहे ।

कोन असली फकीर ? (६२४)

फिकर सबको खा गइ, फिकर सबका पीर;
फिकरकी जो फाकी करे, उसका नाम फकीर ।

(६२५)

पेट समाता अन्न ले, तनहि समाता चीर;
अधिकहि संग्रह ना करे, तिसका नाम फकिर ।

(६२६)

चाह गई चिंता गइ, मनवा बे परवाह;
जीनको कछु न चाहिए, सो शाहनपति शाह ।

संतोष के बारे में (६२७)

गउधन गजधन गोपीधन, ओर रतनधन खान;
पर जहां आवे संतोषधन, तो सब धन धुल समान ।

(६२८)

मारीये आशा आपनी, जीने डस्या संसार;
ताका ओखड (सं)तोष हय, कहे कबीर बिचार ।

(६२९)

कबूक मंदिर मालियां, कबूक जंगल बास;
सबी ठोर सोहामणां, जो हरि होय पास ।

(६३०)

साहेब मेरे मुहको, लुखी रोटी दे;
भाजी मांगत में डरुं, के लुखी छिन न ले ।

(६३१)

सात गांठ गोपिनकी, मनमां न राखे शंक;
नाम अमल माता रहे, गणे इंद्रको रंक ।

धिरज के बारेमें (६३२)

कबीर ! धीरज के धरे, हस्ती सवा मन खाय;
एक टुकके कारणे, स्वांन घरोघर जाय ।

(६३३)

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कछु होय;
माली सिंचे केवरा, पर रुत आवे फल जोय ।

(६३४)

बहोत गइ थोरी रही, ब्याकुल मन मत होय,
धीरज सबको मित्र हय, करी कमाइ मत खोय ।

(६३५)

धीरज बोध तब जानीये, समजे सबकी रीत;
उनका अवगुण आपमे, कब न लावे मीत ।

(६३६)

साहेबकी गत अगम हय, तुं चल अपने अनुमान;
धीरे धीरे पाउं धर, पहोंचेगा प्रमान ।

चिंता के बारे में (६३७)

चिंता मत कर नचिंत्त रहे; पुरनहार समर्थ;
जल ठलमे जो जीव हय, उनकी गांठ क्या गर्थ ?

(६३८)

चिंता अैसी डाकनी, काट कलेजा खाय;
वैद बिचारा क्या करे, कहां तक दवा लगाय ?

(६३९)

सरजनहारे सरजीया, आता पानी लोन;
देनेहारा देत हय, मिटनहारा कोन ?

(६४०)

काहेको तलपत फिरे, काहे पावे दुःख ?
पहेले रजक बनायके, पिछे दिनो मुख ।

(६४१)

अब तुं काहेको डरे, सिरपर हरिका हाथ;
हस्ती चढ कर डोलिये, कुंकर भसें जो लाख ।

(६४२)

रचनहारको चिन कर, क्या खावेकु रोय;
दिल मंदीरमें पेंठ कर, तांन पिछोडी सोय ।

(६४३)

साहेबसे सब कछु बने, बंदेसे कछु नाय;
राइको परवत करे, और परवत राइ माय ।

(६४४)

चिंतो तो हरि नामकी, ओर न चितवे दास;
जो कोइ चितवे नामबिन, सोहि कालकी पास ।

(६४५)

कबीर में क्या चितवुं, हम चितवे क्या होय ?
हरि आपहि चिंता करे, जो मोहे चिंता न होय ।

(६४६)

मेरो चेत्यो हर ना करे, क्या करुं में चित;
हरको चित्यो हर करे, ता पर रहुं नचिंत ।

(६४७)

रामहि किया सो हुवा, राम करे सो होय;
राम करे सो होयगा, काहे कल्पो कोय ?

(६४८)

मुखसे रहे सो मानवी, मनमे रहे सो देव;
सुरते रहे सो संत, इस बिध जानो भेव ।

(६४९)

कबीर कबीर क्या करो, खोजे आप शरीर;
जो ये पांचो वश करो, तो आपे दास कबीर ।

<u>विश्वास</u> (६५०)

अैसा कोन अभाग्या, जो विश्वासे ओर;
राम बिना पग धरनकु, कहो कहां हय ठोर ?

(६५१)

किया बिना मागे बिना, जान बिना सब आय;
काहो को मन कल्पीये, सेहेज रहे समाय ?

(६५२)

दाता नदी एक सम, सब कोइको देत;
हाथ कुंभ जीसका जैसा, तैसाही भर लेत ।

(६५३)

मुरदेकोबी देता हय, कपडा लत्ता आग;
जीवत नर चींता करे, वाको बडो अभाग ।

(६५४)

आशा तो एक रामकी, दुजी आश नीराश;
नदी कीनारे घऱ् करे, कबु न मारे प्यास ।

(६५५)

पिछे चाहे चाकरी, पहेले महीना देय;
ता साहेबको सीर सोंपते, क्युं कसकता हय देह ?

(६५६)

चिडीया प्यासी समूद्र गइ, निर न घटया जाय;
ऐसा बासन न बना, जामे समुद्र समाय ।

(६५७)

अजगर करे न चाकरी, पंखी करे न काम;
दास कबीरा युं कहे, सबका दाता राम ।

(६५८)

राम नामसे दिल मिला, जम हमपर बराय;
मोहे भरोसा इष्टका, बंदा नर्क न जाय ।

(६५९)

भजन भरोसे आपके, मगहर तजा शरीर;
तेज पुंज प्रकामें, पहोंचे दास कबीर

<u>नसीब के बारे में</u> (६६०)

पुरबका रवि पश्चिमे, गर जो उगे प्रभात;
लिखा मिटे नहि नसीबका, लिखा जो हरिके हाथ ।

(६६१)

बुंद पडो जा पलमे, वोह दिन लिखा लेख;
मासा घटे न तल बढे, जो सिर कुटो अनेक ।

(६६२)

ज्यां ऐ जीवरा पग धरे, बख्त बराबर साथ;
जो येह लिखा नसिबमे, तो चले न अविचळ बात ।

(६६३)

जाको जीतना निर्मान किया, ताको तितना होय;
मासा घटे न तल बढे, जो सिर कुटो कोय ।

(६६४)

प्रारब्ध पहेल्ले बना, पिछे बना शरीर;
कबीर, अचंबा ये हय, मन नहि बांधे धीर ।

(६६५)

कबीर ! रेखा करमकी, कबू न मिटे राम;
मेटनहार समर्थ हय, पर समज किया हय काम ।

(६६६)

बख्त कहो भायग कहो, नसीब कहो निरधार;
हजार नाम मनके धरो, मनहि सरजनहार ।

(६६७)

बाहेर सुख दु:ख देतको, हुकम करे मन मांय;
जब उठे मन बख्तको, बाहेर रुप धरी आय ।

(६६८)

बख्त बले भवजल तरे, निर्बळ भया बिकार;
ये सब किया नसीबका, रहे निश्चय निरधार ।

(६६९)

करम अपना परख ले, मन नहि किजे रीस;
हरि लिखा सो पाइये, पथ्थर फोडे सिस ।

(६७०)

किने बिना उपाय कछु, देव कब नहि देत;
खेत बिज वावे नहि, तो क्युं जामे खेत ?

(६७१)

दु:ख लेने जावे नहि, आवे आचा बुच;
सुखका पेहरा होयगा, तब दु:ख करेगा कुच ।

(६७२)

होने पदार्थ होत हय, बिसर जात सब शुद्ध;
जैसी लिखी नसीबमे, तैसी उकलत बुद्ध ।

(६७३)

अनहोनी होय नहि, होनी होय सो होय;
रामचंद्रजी बनकु गये, सुख अछत दु:ख होय ।

(६७४)

अे मन मायग भुल मत, जो आया मन भाग;
सो तेरा टळता नहि, निश्चय संशय त्याग ।

(६७५)

मनकी शंका मेट कर, निशंक रहे निरधार;
निश्चय होय सो होयगा, जो करसी किरतार ।

(६७६)

तेरा वेरी कोइ नहि, तेरी वेरी फयेल;
अपना फयेल मिटा ले, फिर गली गली कर सहेल ।

(६७७)

दुनिया कहे में दोरंगी, पलमे पलटी जाउं;
सुखमे जो सो रहे, वाको दु:खी बनाउं ।

(६७८)

कबीर ! घटमें राम हय, रजक मोत जीव साथ;
कहां चारा मनुष्यका, कलम धनीके हाथ ?

(६७९)

आताल जा पाताल जा, के फोड जा ब्रह्मंद;
कहे कबीर ना मिटे, देह धरेका दंड ।

(६८०)

लिखा मिटे नहि नसीबका, गुरु कर भज हरिनाम!
सिधे मारग नित चल, दया धरम विश्राम ।

<u>श्रम के बारे में</u> (६८१)

श्रम हिते सब कछु बने, बिन श्रम मिले न कांइ;
सिधी अंगुली घी जम्यो, कबहु निकळे नाहि ।

(६८२)

कैसा पर समर्थ हो, बिन उद्यम दुःख पाय,
निकट असन बिन कर चले, कैसे मुखमे जाय ?

(६८३)

श्रम हिते सब होत हय, जो मन राखे धीर,
श्रमते खोदत कुंप ज्युं, ठलमे प्रगटे नीर ।

(६८४)

किये बिना करे बिना, देव कबु नव देत;
खेत बिज वावे नहि, तो क्युं जामे खेत ?

<u>हिंसा नकर ने के बारे मे</u> (६८५)

जीव जन कबु मत मारो, भक्ति करो दया उर धारो;
साधु देव भक्ष अंकुर आय, मिन मद मांस राक्षस खाय ।

(६८६)

मांस कुंकरके खाने हय, मनुष्य देह क्युं खाय;
रती एक घटमें संचरे, सेहेज नर्क ले जाय ।

(६८७)

मांस अहारी मानवि, प्रत्यक्ष राक्षस जान,
ताकी संगत मत करो, होय भजनमे हान ।

(६८८)

राइका बारवा हिस्सा, मांस मुवाकों खाय;
कोट जनम स्वान अवतरे, पडे चोरासी मांय ।

(६८९)

बडा पाप हय हिंसा, तेहि समान न कोय;
धर्मराय जब लेखा मांगे, तब सब नौबत होय ।

(६९०)

जीव मत मारो बापुरा, सबका एकहि प्राज,
जीव हत्या नहि छुटती, करोड गउ दे दान ।

(६९१)

दया दिलमे राखिये, तुं क्युं निर्दय होय;
सबहि जीव हय सांइका, किडी कुजर सोय ।

(६९२)

जीव जीव सब एक हय, जीवका करो बीचार;
बिन सांसाका जीव हय, ताका करो अहार ।

(६९३)

दया दया सब कोइ कहे, मर्म न जाने कोय;
जात जीवकी जाने नहि, दया कहांसे होय ?

(६९४)

मुरघी मुल्लांसे कहे, तुं जबेह करता हय मोहे;
साहेब जब लेखा मांगे, तब संकट पडसी तोहे ।

(६९५)

गला काट कलमा पढे, मुखसे कहे हलाल;
साहेब के दरबारमे, होगा कोन हलाल ?

(६९६)

साहेबके दरबारमे, क्युं कर पावे दाद;
पहेले काम बुरा करे, बाद करे फरियाद ।

(६९७)

गला गुस्सेका काट, मियां केहेरकु मार;
पांचो बकरी जुबा करो, तब पावे दिदार ।

(६९८)

जो जाको काटे, सो फिर ताहे बाटे;
कहे कबीर ना छुटे, सामा सामी साटे ।

(६९९)

जीभ्या जीने वश करी, तिने वश किया जहांन;
नहि तो अवगुण उपजे, कहे सब संत सुजान ।

(७००)

मखी गुडमे गड गई, पांख रहि लपटाय;
सीस पटक कर घसे, स्वादे देहि गुमाय ।

(७०१)

आधी ओर सुकी भली, सारी सुख संताप;
जो चाहेगा चोपरी, तो बहोत सहेगा बाप ।

(७०२)

खांटा मिठां देखकर, जीभ्या धर ले नीर;
तबलग मन पाका नहि, काचा निपट कठीर ।

(७०३)

खाटा मीठा खाय कर, करे इंद्रियोका भोग;
सो कैसे जा पहोंचे, साहेबजी के लोग ?

(७०४)

देख पराइ चोपरी, मत ललचाओ जी;
लुखा सुका टुकडा, और ठंडा पानी पी ।

(७०५)

दया धर्मको मुळ हय, पाप मुळ अभियान;
कबीर, दया न छोडीये, जब लग घटमे प्रान ।

(७०६)

दया सबहि पर किजीये, तुं क्युं निर्दय होय;
जाकी बुद्धि ब्रह्ममे, सो क्युं खुनी होय ?

(७०७)

पुन बरा उपकार हय, सबके उपर भाख;
जीव दया चित्त राखीये, बेद पुराण शाख ।

(७०८)

किया कराया सब गया, जब आया अहंकार;
कोट करम लागें रहें, एक अहंकारकी लार ।

(७०९)

अहन्ता न आनिये, जो हरि सिंहासन दे;
जो दिल राखे दिनता, सांई अपना कर ले;

(७१०)

लधुताईमे प्रभुताई हंय, प्रभुताइसे प्रभु दूर;
किडी हो मिसरी चुंगे, हाथी सिर डारे धूर ।

(७११)

बडि बिपत बडाई हय, नाना करमसे दूर;
तारे सब न्यारे रहे, ग्रहे चंद्र और सूर ।

(७१२)

कबीर ! गर्व न किजीये, रंक न हसिये कोय;
अजहु नाव सागरमे हय, ना जानु क्या होय ।

(७१३)

उंचा पानी ना टिंके, निचेहि ठहेराय;
निचा होय सो भर पिये, उंचा प्यासा जाय ।

(७१४)

उंच कुल जनमे कहां, देहि धरे अस्थूल;
पार ब्रह्मको ना चढे, बांस बिहोना फुल ।

(७१५)

उंचा कुल कडा किजीये, जो करणी उंच न होय ?
कनक कलेशमें मन भरा, संतो निंदिया सोय ।

(७१६)

उंचा देख न राचियें, उंचा पेंड खजुर;
पंखी न बेठे छांयडे, फल लागो पन दुर ।

(७१७)

उंचे कुलके कारने, बांश बडयो अहंकार;
राम भजन हिरंदे नहि, जाल्यो सब परिवार ।

(७१८)

कबीर ! तहां न जाइये, जहां कुलको हेत;
साधुपनो जाने नाहि, नाम बापको लेत ।

(७१९)

बडे बडाइ न करे, बडा न बोले बोल;
हिरा मुखसे ना कहे, लाख हमारा मोल ।

(७२०)

ना मुंज छाइ न छापरी, ना मुज घर न गाम;
जो कोइ पुछे कोन हय ? ना मुज जात न ठाम ।

(७२१)

मेरा मुजमे कछु नहि, जो कछु होय सो तेरा;
तेरा तुजको सोंपते, क्या लगेगा मेरा ?

(७२२)

छोडे जब अभिमानको, सुखी भया सब जीव;
भावे कोइ कछु कहें, मेरे हदय निज पिव ।

(७२३)

तिम्मर गया रवि देखते, कुबुद्धि गइ गुरु ज्ञान;
सुबुद्धि गइ कछु लोभसे, भक्ति गइ अभिमान ।

(७२४)

आपे सबरि जाय, किया कराया सोय;
आपा तजे हरिको भजे, लाखनमे बिरला कोय ।

(७२५)

भरम गया तब जानिये, अचरज लागे न कोय;
ए लिला हय रामकी, निरखो आपा खोय ।

वाद विवाद के बारे में (७२६)

वादविवाद नहि कर, कर नीत एक बिचार;
राम समर चित लायके, सब करनिमें सार ।

(७२७)

बोलत हि बिष वाद हय, पुछत हि हय वाद;
अैसे मनमे समज कर, चुप रहे सो साध ।

(७२८)

वाद करे सो जानिये, निवरेका वोह काम;
संत फुरसद कहां पावे, सुमरन करतां राम ?

(७२९)

कहेते को कहे जाने दे, गुरुकी शिख तुं लेय;
साकुंथ एक स्वांनको, फेर जवाब न देय ।

(७३०)

आवत गारी एक हय, उलट होय अनेक;
कहे कबीर ना उलटीयें, वाहि एककी एक ।

(७३१)

गारीहिंसे उपजे, क्लेश कष्ट और मिच;
हारी चले सो साधवां, लागि मरें सो निच ।

(७३२)

गारी मोटा ज्ञान हय, जो रंचक उरमें जरे;
कोटी सवारे काम, बेरी उलटा पांय परे ।

(७३३)

बहेंतेको बहे जाने दे, मत पकडावो ठोर;
समजाया समजे नहि, दे धक्का दो ओर ।

(७३४)

बहेतेको मत बहेन दे, ग्रही पकडवो ठोर;
कह्यो सुनियो माने नहि, शब्द कहो दो ओर ।

(७३५)

अती हठ मत कर, हठे बात न होय;
ज्युं ज्युं भीजे कामरी, त्युं त्युं बारी होय ।

(७३६)

सबसे हिलीये, सबसे मिल्ये, सबका लिजीये नाम;
हाजी ! हाजी ! सबसे कहिये, बसीये अपने ठाम ।

(७३७)

अति बला नहि बोलनां, अति भला नहि चूप;
अति भला नहि बरसनां, अति भला नहि धूप ।

(७३८)

वादविवाद मत कर, कर नित अपना काम;
गुरु चरणे चित लायके, भज ले केवळ राम ।

(७३९)

झगरा नित्य बराईये, झगरा बूरी बलाय;
दुःख उपजे चिंता दहे, झगरामे घर जाय ।

निंदा - कपट के बारे मे (७४०)

कपटी मित्र न कीजिये, पेट पेंठ बुध लेत;
आगे रहा दीखायके, पिछे धक्का देत ।

(७४१)

कपटीके मन कपट बसे, साधुके मन राम;
गंडु लोक तो भाग चले, सुराके संग्राम ।

(७४२)

निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोय;
बिन साबु बिन पानीसें, मेल हमारा धोय ।

(७४३)

कामी तिरे क्रोधी तिरे, लोभीकी गत होय;
सलील भगत संसारमे, तिरा शके न कोय ।

(७४४)

काहुको न निंदीये, सबको कहिये संत;
करनी अपनीसों तिरे, मिल भजीए भगवंत ।

(७४५)

आपनको न सहराइए, ओर न निंदीये कोय;
अजहु लांबा काल हये, ना जानुं क्या होय ।

(७४६)

कंचनको तजवो सेहेल, सेहेल हय त्रीयाको नेह;
निंदा बाल त्यागवो, बरो कठीण हय येह ।

(७४७)

अंतर कतरनी जीभ्या रस, नैनां उपना नेह;
ताकी संगत रामजी, स्वपनेहि मत देय ।

(७४८)

हिरदे कतरनी जीभ्या रस, मुख बालनका रंग;
आगे भला पिछे बुरा, ताको तजीये संग ।

(७४९)

जान बुजी साचकु, करे जुठो कोइ नेह;
उसकी संगत रामजी, मोहे कबु न देय ।

(७५०)

जुठाको जुठा मिले, अधिका बढे स्नेह;
जुठेको साचा मिले, तबहि तुटे नेह ।

(७५१)

कपटी कदी न ओघरे, सो साधनको संग;
मुंज पखाले गंगमे, ज्युं भिजे त्युं तंग ।

(७५२)

कबीर ! यहां तो राम हय, नंदवेको कछु नाहि;
किस बीध गोविंद सेविये, राम बसे सब मांहि ।

नारी के बारे में (७५३)

नारी दिसा न देखीये, धेख न किजे दोर;
देखतेहि बिख चढे, मन ब्यापे कछु ओर ।

(७५४)

नारी काली उजली, नेक विमासी जोय;
सबहि डारे फंदमे, निंच लिये सब कोय ।

(७५५)

नारी सेति नेह, बुद्धि विवेक सब हरे;
काय गुमावे देह, कारज कोई ना सरे ।

(७५६)

नारी गुमावे तिन सुख, जो नर पास होय;
भक्ति मुक्ति निज ज्ञानमें, पेंठ शके न कोय ।

(७५७)

बिषय प्यारी प्रितडी, जब हरि अंतर नाहि;
जब हरि अंतरमे बसें, तब बिषयसे प्रीत नांहि ।

(७५८)

कबीर ! पर नारी झेरी छुरी, मत कोइ लावो अंग;
रावनके दस शीर गये, पर नारीके संग ।

(७५९)

परनारी प्रत्यक्ष छुरी, जाणे बिरला कोय;
नाहिन पेटमें मारीये, गर सोनेकी होय ।

(७६०)

परनारी राता फिरें, चोरी बंद तो खाय;
दिवस चार सरसो फिरें, अंत समूलो जाय ।

(७६१)
पर नारीको राचनो, जैसी लसनकी खान;
खुंने पेठी खाईये, प्रगट होय निदांन ।

(७६२)
एक कनक अरु कामीनी, बिख्या फळको पाय;
देखतहि बिख चढे, खाये सो मर जाय ।

(७६३)
नारी मदन तलावडी, भवसागरकी पाल;
नरे मछा के कारने, जीवंत मांडी जाल ।

(७६४)
कामी अमृत न भावहि, बिख्या लिनी शोध;
जनम गमायो खाधमें, भावे त्युं परमोध ।

(७६५)
कामी लज्या न करे, मन माने युं लाड;
निंद न मांगे साठरो, भुख न मागे स्वाद ।

(७६६)
काम जहां तहां राम नहि, राम तहां नहि काम;
दोनो एक जा क्युं रहे, काम राम एक ठाम ।

(७६७)
भक्ति बिगाडी कामियां, इंद्रि केरे स्वाद;
जनम गमाया खाधमें, हिरा खोया हाथ ।

(७६८)
कबीर ! मन मस्तक भया, इंद्रि अपने हाथ;
तोय कबू न किजीये, कनक कामीनी साथ ।

(७६९)
जहां जलाइ सुंदरी, तुं मत जाय कबीर;
भस्मी हो कर लागसी, सोना समा शरीर ।

(७७०)
नारी तो हमहि करी, जाना नहि बिचार;
जब जानी तब पर हरी, नारी बडो बिकार ।

(७७१)
जैसा प्रेम पर नारीसों, अैसा हरसे होय;
सांईयां के दरबारमे, पल्ला न पकडे कोय ।

(७७२)
कामका गुरु कामीनी, लोभिका गुरु दाम;
कबीरका गुरु संत हय, संतनका गुरु राम ।

(७७३)
नारी नरक न जानहि, सब संतनकी खान;
जामे हरिजन उपजे, सोहि रतनागरकी खान ।

(७७४)
नारी पुरुष कोइ नहि, सुन गत गुरुकी शिख;
बिषय फल बहोत अनोप हय, मत कोई देखो चिख ।

(७७५)
मांस मांस सब एक हय,क्या हरनी क्या गाय;
नार नार सब एक हय, क्या मेहेरी क्या माय ।

(७७६)
जो मन समजे ज्ञानमे, तो ज्ञान होय सहाय;
तो फिर तोकुं ना रुचे, जाकु तुं कहे माय ।

(७७७)
पहेल्ले मांका खसम भया, पिछे भया हय पूत;
अंतर गत समजके, छोड चले सब धुत ।

(७७८)
खसम उलट बेटा भया, माता मेहेरी होय;
मुरख मन समजे नहि, बडा अचंबा मोय ।

(७७९)
समजनका घर ओर हय, औरोंका घर ओर;
समज्या पिछे जानियें, राम बसें सब ठोर ।

(७८०)
साहेब तेरी साहेबी, सब घट रही समाय;
ज्युं महेदीके पातमे, लाली लखी न जाय ।